RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

ईंटें, मनके तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

अध्याय-1 | भाग-4

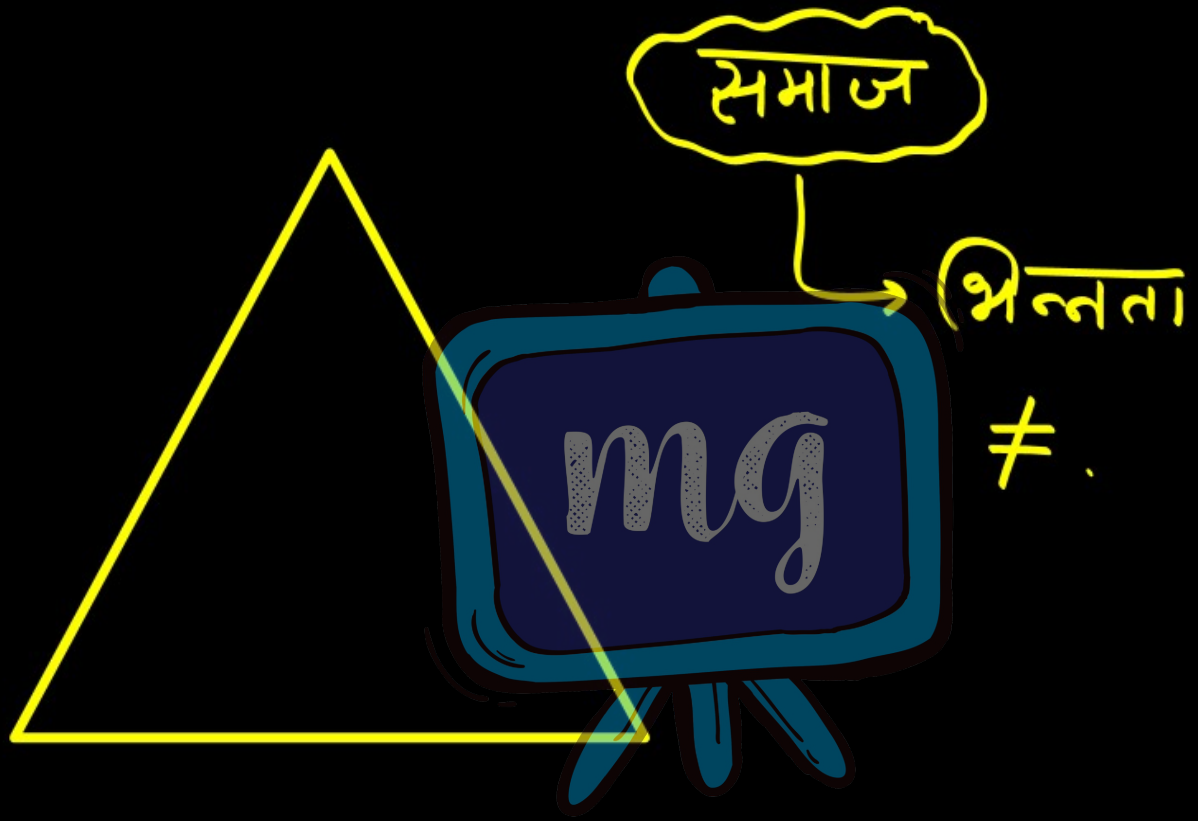


हड़प्पा स०

Q. मोहनजोदड़ो शहर से कितने कुएँ मिले थे?

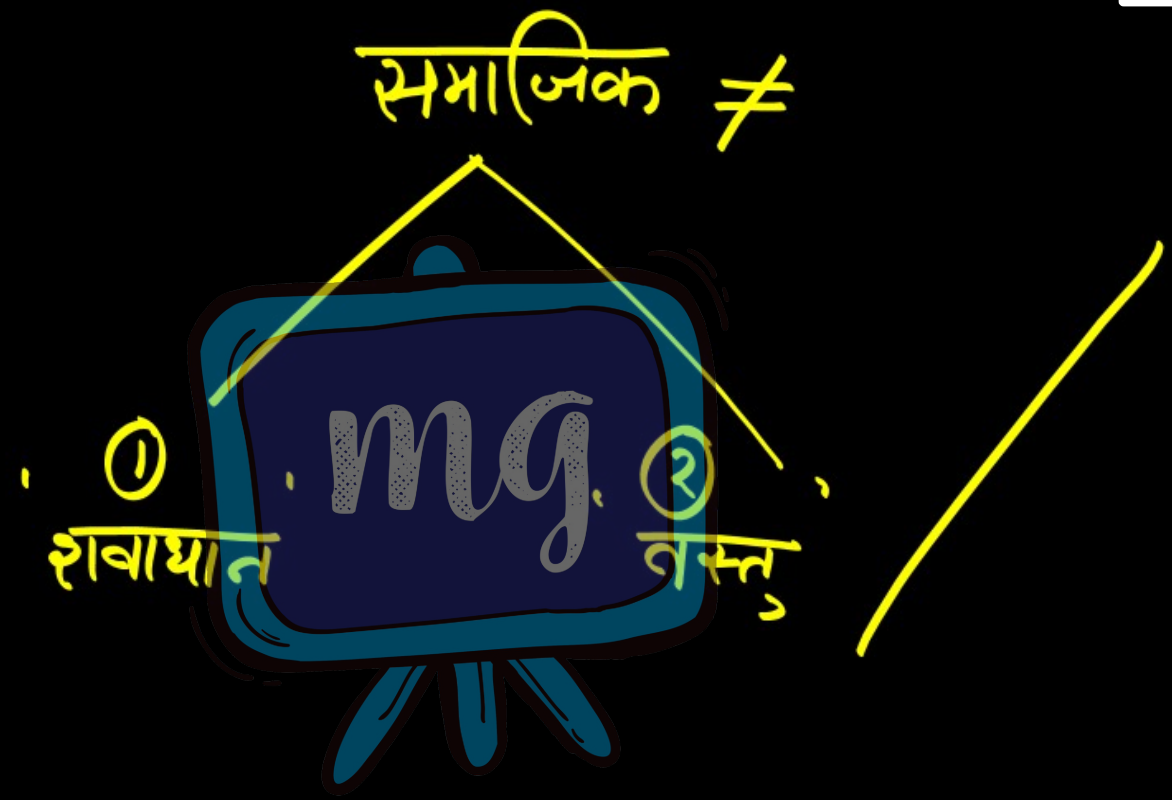
a) 100
b) 200
c) 1000
d) 700.




समाज
भिन्नता
≠
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन

A. शवाधानों का अध्ययन

(1) शवाधान : शवों का गर्तों में दफनाया जाता था। गर्तों की बनावट एक दूसरे से भिन्न होती थी। क्योंकि कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की जाती थी जो कि सामाजिक भिन्नता का संकेत देती है।

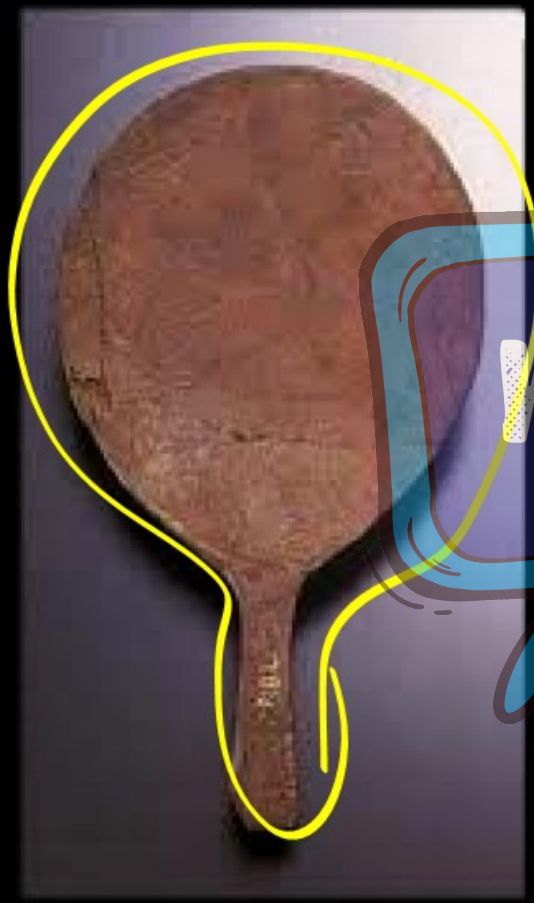
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ कब्रों में मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले हैं जो संकेत देते हैं कि उनकी मान्यता रही हो कि ये मृत्योपरांत प्रयोग किये जा सकते हैं।
- कुछ शवाधानों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों में आभूषण मिले हैं।
- मृतकों के तांबे के दर्पणों के साथ भी दफनाया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 1980 के दशक में हड़प्पा के कब्रिस्तान में उत्खन्न में एक पुरुष की खोपड़ी के समीप शंख के उछल्ले, जैस्पर (एक उपरत्न), मनके, सूक्ष्य मनकों से बना एक आभूषण मिला है।
- मिश्र में भी विशाल पिरामिडों में जो कि हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थे राजकीय शवाधान बड़ी मात्रा में मिले हैं। जिनमें धन-सम्पत्ति भी दफनाई जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. उपयोगी तथा विलास की वस्तुओं में वर्गीकरण

(a) उपयोगी वस्तुएं :– ये रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं हैं जो पत्थर या मिट्टी से बनायी जाती है।
जैसे- चक्कियां, मृदभाण्ड, सुइयां आदि। ये वस्तुएं सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

(b) विलास की वस्तुएं :– ये दुर्लभ या महंगी होती हैं। ये स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थ से अथवा जटिल तकनीक से बनती हैं।

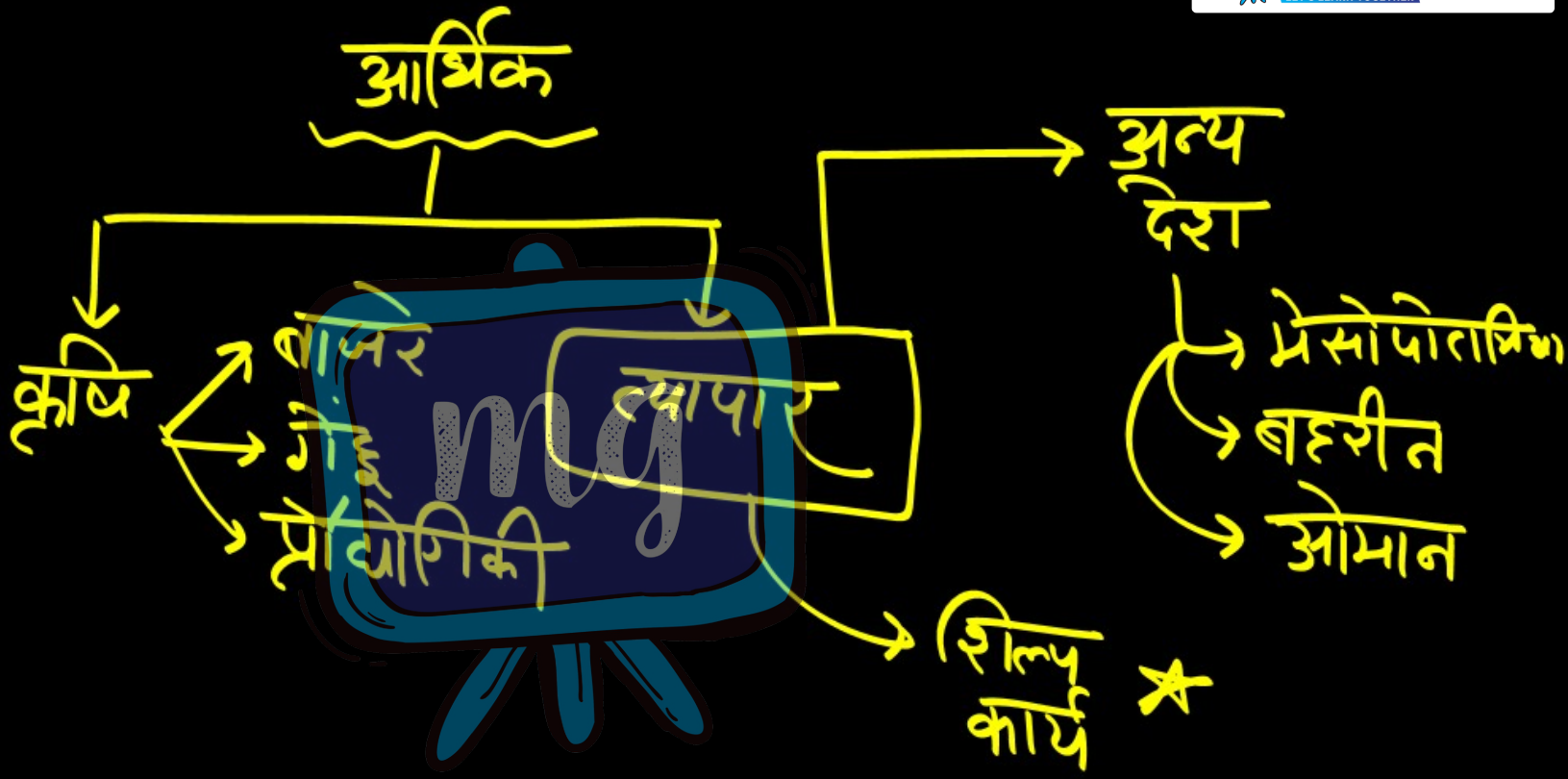


1920

Q. हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक भिन्नता का अवलोकन करें?

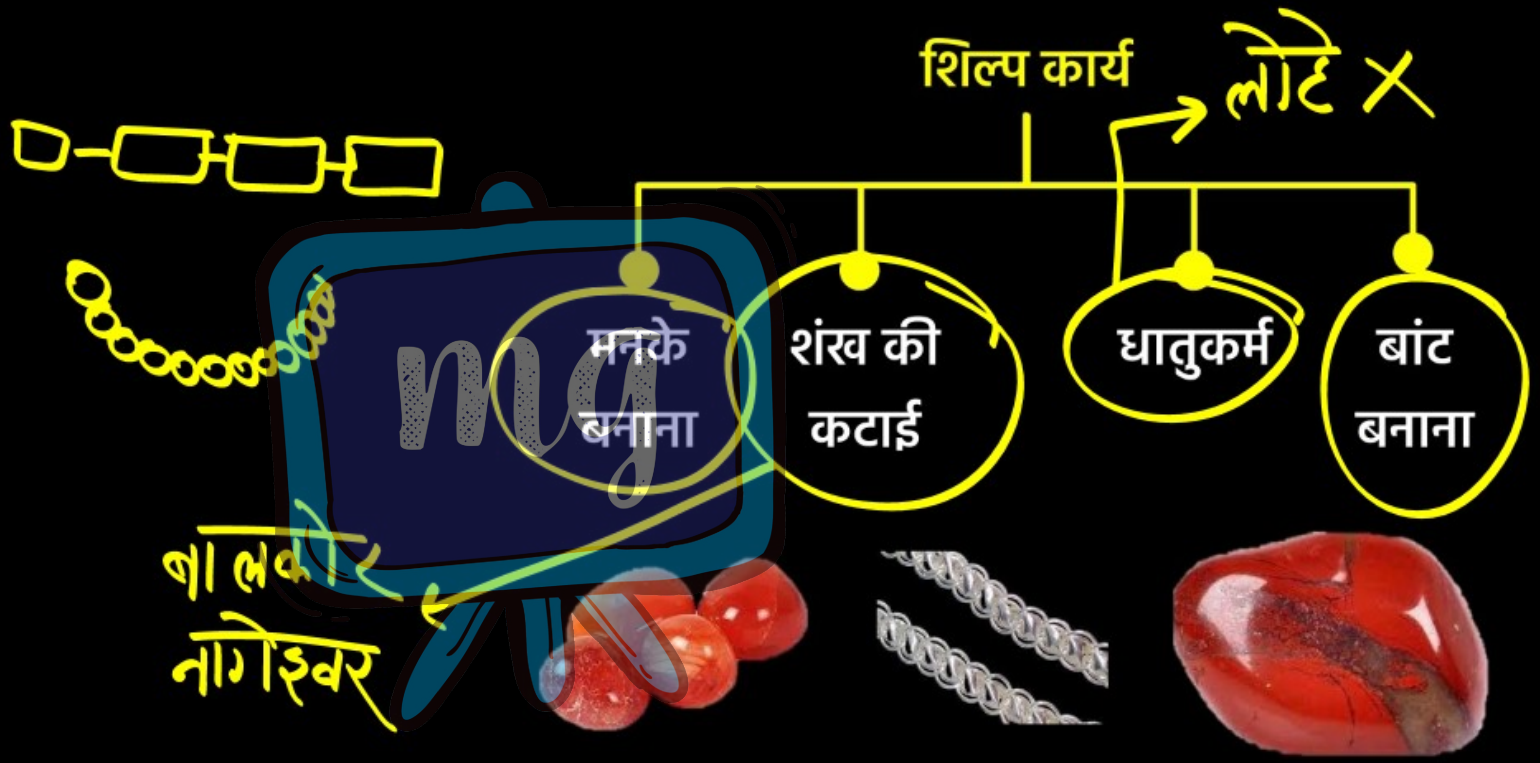


Q. उपयोगी और विलास वस्तुओं के उदाहरण लिखें?


आर्थिक
कृषि
खनिज
गेहूँ
प्रौद्योगिकी
व्यापार
अल्प देश
मेसोपोटामिया
बहरीन
ओमान
शिल्प कार्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

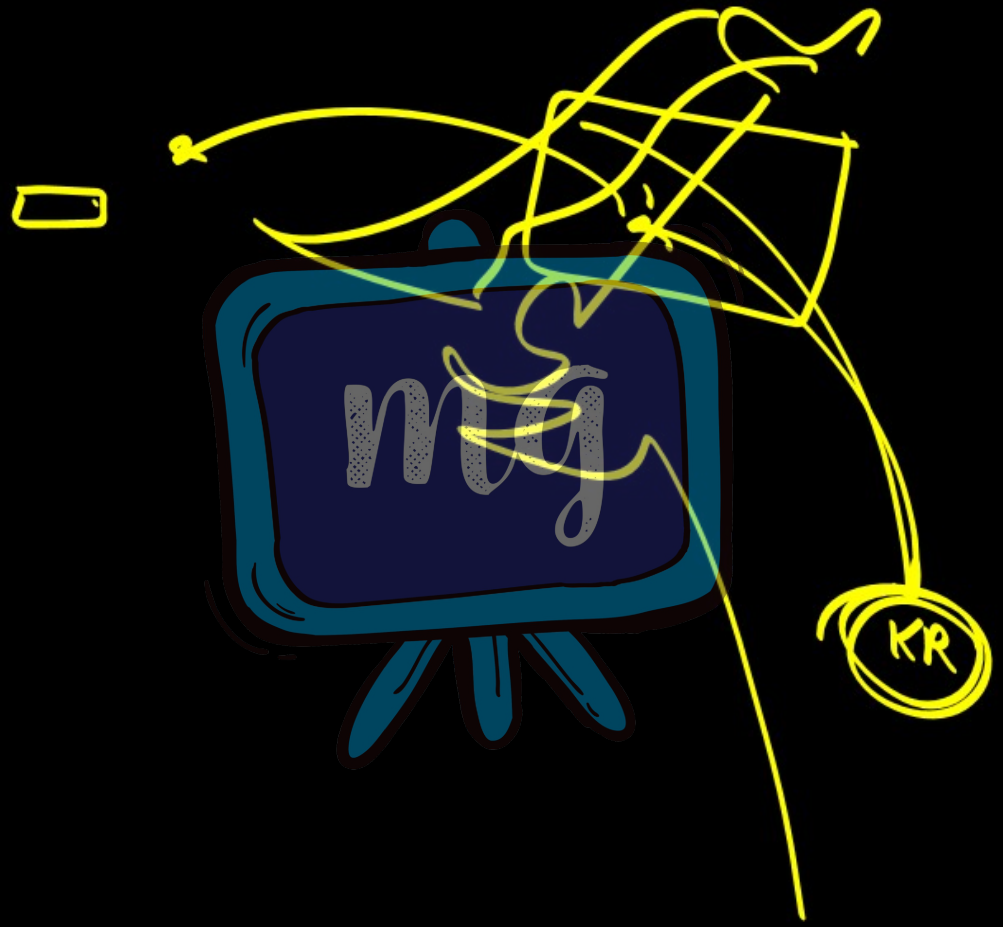


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. **मनकें बनाना :** मनकों का निर्माण विविध पदार्थों से होता था।
   - कार्निलियन (सुंदर लाल रंग का)
   - जेस्पर
   - स्फटिक
   - शैलखड़ी जैसे पत्थरों से तथा
   - तांबा
   - कांसा
   - सोना जैसे धातुओं से


mg
KR

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

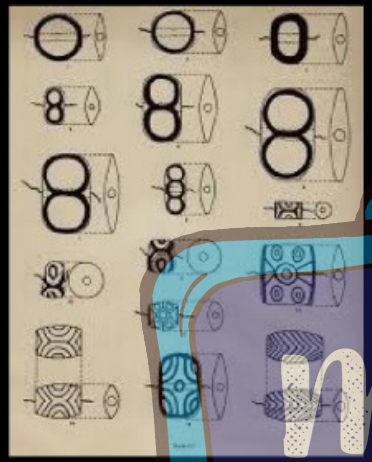
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शंख
- फयान्स
- पकी मिट्टी से भी मनके बनते थे।



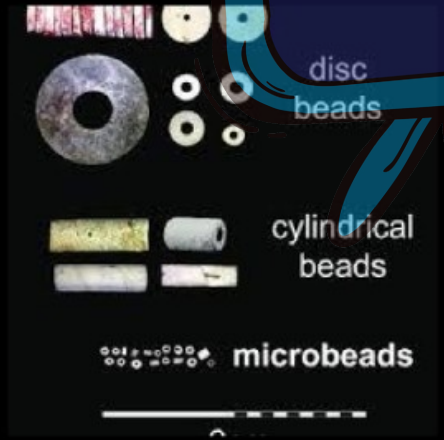
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मनके कई आकार के होते थे

1. चक्राकार
2. बेलनाकार
3. गोलाकार
4. ढोलाकार
5. खण्डित







RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- मनकों को उत्कीर्णन या चित्रकारी से सजाया गया।
- सेलखड़ी चूर्ण के लेप को सांचे में ढालकर मनके बनाए जाते थे।
- कार्नेलियन का लाल रंग पीले कच्चे माल को पकाकर प्राप्त होता था।
- पत्थर के पिंड पहले तोड़े जाते, फिर बारीकी से शल्क निकालकर अंतिम रुप दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- इसके बाद घिसाई, पॉलिश और छेद करने की प्रक्रिया होती थी।
- चन्हूदड़ो शिल्प कार्य में लगभग पूरी तरह संलग्न था।
- चन्हूदड़ो, लोथल और धौलावीरा में छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मनके बनाने की प्रक्रिया समझाइये ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **शंख से बनी वस्तुएँ :** शंख से चूड़ियां, करछियां और पच्चीकारी की वस्तुएं बनती थीं।

- नागेश्वर और बालाकोट, समुद्र तट के पास होने के कारण, शंख निर्माण के प्रमुख केंद्र थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जगह

(SEZ)

RIICO



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्पादन केन्द्रों की पहचान

शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान पुरातत्वविद् कुछ चीजों को ढूंढकर करते हैं। जैसे-

(i) जहां पर प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, तांबा अयस्क जैसा कच्चा माल मिला हो।

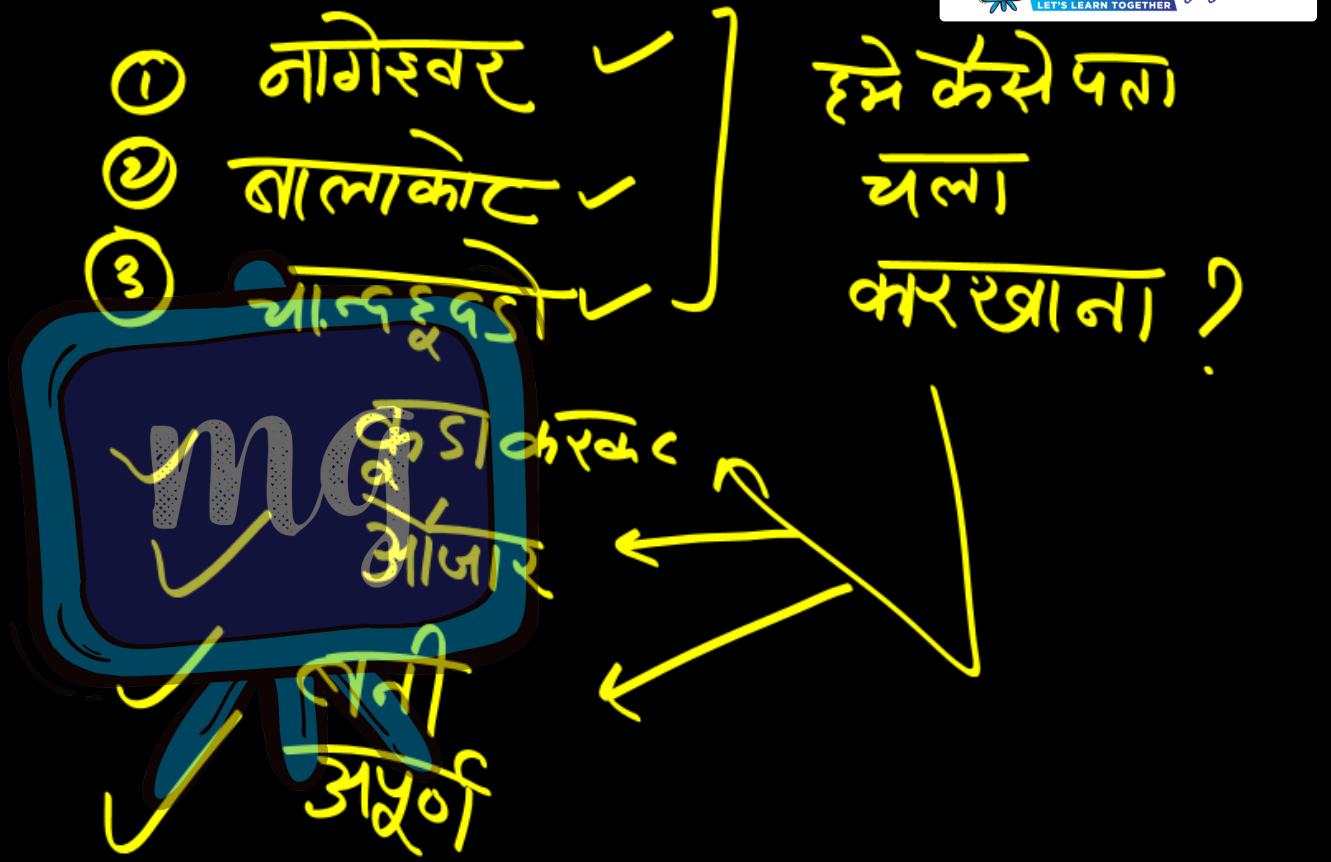
(ii) औजार मिले हों।

(iii) अपूर्ण वस्तुऐं हों।

(iv) त्याग दिया गया माल और कूड़ा करकट मिला हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

माल प्राप्त करने संबंधी नीतियाँ (तरीके)

- शिल्प उत्पादन के लिए स्थानीय मिट्टी के अलावा पत्थर, लकड़ी और धातु बाहर से मंगाए जाते थे।

(i) बैलगाड़ियों के मिट्टी के प्रतिरूप मिले हैं, जो स्थल मार्ग के लिए बैलगाड़ी को परिवहन का महत्वपूर्ण साधन दर्शाते हैं।

(ii) सिंधु तथा इसकी उपनदियों के किनारे पर रहने वाले लोग नदी मार्गों का प्रयोग करते होंगे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल

- शिल्प उत्पादन हेतु माल प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासी कई तरीके अपनाते थे।

1. नागेश्वर एवं बालाकोट जहां शंख उपलब्ध थे, बस्तियां स्थापित कर लीं।
2. शोर्तुघई (अफगानिस्तान) कीमती नीले रंग के लाजमर्द मणि के स्त्रोत के निकट था।
3. लोथल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(a) कार्निलियन के स्त्रोत (गुजरात में भरुच)

(b) सेलखड़ी के स्त्रोत (दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात)

(c) धातु स्त्रोत (राजस्थान) के निकट था।

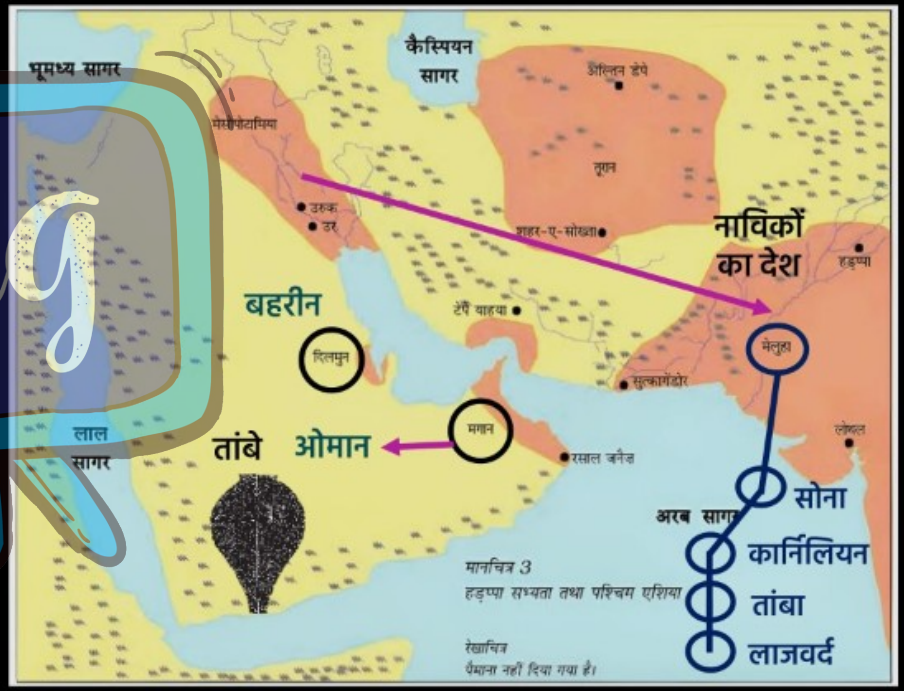
4. कच्चा माल प्राप्त करने के लिए राजस्थान में खेतड़ी से (ताँबा) तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) अभियान भेजकर संपर्क स्थापित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- खेतड़ी क्षेत्र के साक्ष्यों को पुरातत्वविदों ने गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति नाम दिया।
- यहां के मृदभांड हड़प्पा से भिन्न थे और तांबे की वस्तुओं के असाधारण भंडार के केंद्र थे।

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

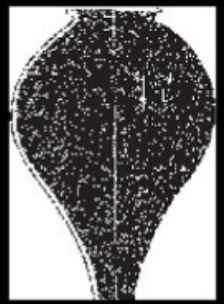
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- तांबा संभवतः ओमान, अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी छोर से लाया जाता था।
- ओमानी तांबे और हड़प्पाई पुरावस्तुओं में निकल के अंश मिले हैं।
- मेसोपोटामिया के लेखों में मगान (ओमान) से तांबे के आगमन का उल्लेख मिलता है, जो लंबी दूरी के संपर्कों को दर्शाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया के लेखों से दिलमुन (बहरीन द्वीप), मगान (ओमान), मेलुहा (हड़प्पाई क्षेत्र) से संपर्कों की जानकारी मिली है तथा इन लेखों में मेलुहा से कार्निलियन, लाजवर्द मणि, ताँबा, सोना तथा विशिष्ट प्रकार की लकड़ी प्राप्त करने के भी उल्लेख हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक विशिष्ट हड़प्पाई मर्तबान, जिसके ऊपर काली मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी, ओमानी स्थलों से मिला है।
- काली मिट्टी तरल पदार्थ के रिसाव को रोकती थी।
- संभवतः हड़प्पाई लोग इसमें रखे सामान के बदले ओमानी तांबा लेते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मेसोपोटामिया से मेलुहा लोगों का संपर्क सामुद्रिक मार्ग से था, इसलिए वो मेलुहा को नाविकों का देश कहते थे। मोहर पर नाव का चिह्न यही दर्शाता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मुहरें

- मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लम्बी दूरी के संपर्कों को आसान बनाता था।
- सामान भरे थैले के मुख को रस्सी से बांधकर उसकी गाँठ पर गीली मिट्टी जमा करके मुहरों से दबा कर छाप डाल दी जाती थी।
- गंतव्य स्थान तक छाप वैसी ही अक्षुण्ण रहे तो किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं हुई है।
- मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान हो जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मुहरें



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लिपि (रहस्यमय)

- हड़प्पाई मुहरों में एक पंक्ति में लिखा हुआ संभवतः मालिक के नाम व पट्टी को दर्शाता है।
- इस पर बना चित्र (आमतौर पर जानवर का) अनपढ़ लोगों को सांकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था।
- अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त है सबसे लंबे अभिलेख में 26 चिन्ह हैं।



एक प्राचीन सूचनापट्ट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



लिपि

अपठित

375-400

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी है, लेकिन यह वर्णमालीय नहीं लगती क्योंकि इसमें 375 से 400 चिन्ह हैं।
- वर्णमालीय लिपियों में स्वर और व्यंजन के चिन्ह होते हैं।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी, क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल और बाईं ओर संकुचन है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लिखावटें : मुहरों, औजारों, मर्तबानों, आभूषणों, अस्थि छड़ों और सूचना पट्टे पर मिली हैं, जिससे साक्षरता व्यापक साबित होती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बांट

- विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।
- बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- घनाकार आकृति के होते थे।
- इन बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे। जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में किया जाता होगा।
- धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन सत्ता

- हडप्पाई पुरावस्तुओं में एकरुपता
- श्रम संगठित करना

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रासाद तथा शासक

- मोहनजोदड़ो के एक विशाल भवन को प्रासाद कहा गया, लेकिन कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिलीं।
- एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' कहा गया।
- यह नाम मेसोपोटामिया के 'पुरोहित राजाओं' से समानता के आधार पर दिया गया।
- मेसोपोटामिया की कीलाक्षर लिपि पढ़ी जा चुकी थी, जिससे यह तुलना संभव हुई।